प्रदर्शन कला और उनके आधारभूत तत्व

'प्रदर्शन कला' का शाब्दिक अर्थ है - किसी भी कला अथवा कौशल को दर्शक के सम्मुख प्रदर्शित करना तथा साथ ही जिन्हें देखा और सुना जा सके। अर्थात् जब कलाकार अपनी शारीरिक भाव - भंगिमा, आवाजों, सम्वादों तथा शारीरिक क्रियाओं आदि द्वारा दर्शकों अथवा श्रोता के समक्ष अपनी कला को प्रदर्शित करता है, प्रदर्शन कला कहलाते है। इसे निष्पादन कला के नाम से भी जाना जाता है। इस कला के अन्तर्गत संगीत नृत्य, नाटक, सर्कस आदि आते है। अतएव इन सभी कलाओं को श्रोता प्रत्यक्ष रूप से देख एंव सुन सकते है।

प्रदर्शन कला के आधारभूत तत्व

i) मंच
ii) ध्वनि-विस्तारक यंत्र
iii) वाद्य यंत्र
iv) अभिव्यक्ति
v) वेश-भूषा
vi) अवलोकन

Scanned with CamScanner

i) मंच

'मंच' एक विशिष्ट स्थान है, जहाँ कलाकार अपनी कला अथवा विशिष्ट विचारों की प्रस्तुति के लिए विराजमान होते है। इसका प्रमुख विषय रंजकता होने के कारण इसे रंगमंच भी कहा जाता है। आदिकाल मे कलाकार अपनी कला को किसी भी स्थान पर, चाहे वह खुला मैदान ही क्यों न हो, प्रस्तुत करता था। परन्तु समय के साथ-साथ कला के क्षेत्र में मंच का महत्व -पूर्ण स्थान है। आज-कल कलाकार की कला -कारी भी भव्य मंच पर ही निर्भर करती है, जितना बड़ा मंच होगा, कलाकार अपनी कला की प्रस्तुति भी उतना ही सुन्दर-स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है। अतः मंच का स्थान उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कलाकार का।

ii) ध्वनि-विस्तारक यंत्र

'ध्वनि-विस्तारक यंत्र' प्रस्तुति और प्रस्तोता के बीच की एक महत्वपूर्ण इकाई है। ध्वनि उपकरण उच्च कोटि का होना चाहिए। क्योंकि यदि ध्वनि का प्रसार ठीक नही हो पाता है, तो बहुत अच्छी प्रस्तुति होने के बावजूद भी श्रोता व दर्शक को उतना आनंद प्राप्त नही हो पाता है, जितना कि ध्वनि-विस्तारक यंत्र

Scanned with CamScanner

अच्छे स्तर का प्रयोग करने के फलस्वरूप होगा। ध्वनि प्रबंध अच्छे स्तर का न होने पर प्रस्तुति का सारा आनंद समाप्त हो जाता है। अतएव प्रदर्शन कला में ध्वनि विस्तारक यंत्र का होना भी अति आवश्यक है।

iii) वाद्य यंत्र

प्रदर्शित की जाने वाली कला को आकर्षक व प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न वाद्य यंत्र भी आवश्यक तत्वों में से एक है। 'वाद्य-संगीत' का संगीत की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए किसी अन्य कला की अपेक्षा नहीं ~~रही~~ रहती, किन्तु दूसरी कलाएं इसके सहयोग के बिना अपना पूर्ण कार्य नहीं कर पाती है। वाद्य, संगीत की अपरिहार्य तत्व है। यहाँ तक कि गायक की स्वरोच्चार के लिए, जो आश्यक उपकरण लगते है, वाद्य यंत्र ही तो उनकी पूर्ती करती है, उदाहरण के लिए, नृत्य को ही ले। नर्तक को अपनी कला कला के प्रदर्शन के लिए वाद्यों का सहयोग नितान्त आवश्यक है। यह सहयोग एक बड़े वृन्द-वादन द्वारा अथवा केवल ठेका देने वाले वाद्यों का भी हो सकता है। अतः वाद्यों की महत्ता न केवल कण्ठ व नृत्य के लिए अनिवार्य है, बल्कि अभिनय और नाटक भी इससे अछूता नहीं है। विभिन्न वाद्यों

Scanned with CamScanner

की सामयिक प्रस्तुति नाटकों के रसों की निष्पत्ति में अहम भूमिका अदा करती है।

iv) अभिव्यक्ति

अभिव्यक्ति, किसी भी प्रदर्शनीय कला का एक सशक्त माध्यम है। जिसके बिना प्रदर्शन कला का कोई वजूद नहीं रह जाता है। क्योंकि जिस प्रकार अभिव्यक्ति हमारे विचारों को दूसरों को समझने में सहायता प्रदान करती है, ठीक उसी प्रकार जब हम किसी कला के माध्यम से अपनी प्रस्तुति को प्रदर्शित करते है तो यहाँ 'अभिव्यक्ति' की प्रमुख भूमिका होती है।

Scanned with CamScanner